ISSN: 2455 - 927X

EIJO: Journal of Humanities, Social Affair, Management and Innovative Research (EIJO– JHSAMIR)

Einstein International Journal Organization (EIJO)

Available Online at: www.eijo.in

Volume – 9, Issue – 2, March - April - 2024, Page No. : 07 – 11

छात्रों के गुणात्मक सुधार के लिए भूगोल शिक्षण की रणनीति

रेखा शर्मा, भूगोल विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतमें, राजस्थान एक ऐसा राज्य है जिसने हाल के वर्षों में शिक्षा के क्षेत्रमें महत्वपूर्ण प्रगति की है। हालाँकि, राज्य अभी भी कम नामांकन, उच्चड्रॉपआउट दर, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे और शिक्षा की गुणवत्ता जैसी विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों का समाधान करने और यहसुनिश्चित करने के लिए कि राज्य के प्रत्येक बच्चे की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच हो, राजस्थान सरकार ने कई नीतियां और पहल शुरू की हैं। यह अध्यायगुणवत्ता और नवाचार पर ध्यान देने के साथ राज्य में शिक्षा कोबदलने के लिए राजस्थान सरकार द्वारा अपनाई गई रणनीतियों पर चर्चा करेगा।

मुख्य-शब्द: सांस्कृतिक विरासत, अध्यायगुणवत्ता, खराबगुणवत्ता

शोध कार्य की विधि

प्रस्तुत शोध कार्य के उदेशयों की पूर्ति हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया जाएगा।

उत्तर की मूल्यांकन : प्रामाणिक जानकारी के लिए विभिन्न साहित्यों का गहन अध्ययन किया गया।उपरोक्त अध्ययन के लिए विभिन्न समाचार पत्र लेख, मैगज़ीन और शोध पत्रिकाओं को देखा गया और उनका उल्लेख किया गया।प्रश्नावली के अनुसार मतों कोसांख्यिकीयमाध्यम से प्रस्तुत किया गया।

शोध परिणाम

राजस्थान में शिक्षा का महत्व

शिक्षा किसी भी समाज के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, औरराजस्थान कोई अपवाद नहीं है। राजस्थान राज्य अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासतऔर ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है, और इस विरासत को संरक्षित औरबढ़ावा देने के लिए शिक्षा आवश्यक है। इसके अलावा, शिक्षा आर्थिक विकास औरसामाजिक प्रगति का एक प्रमुख चालक है। यह व्यक्तियों और समुदायों को उनकेजीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए सशक्त बनाता है, और एक अधिक समृद्धऔर न्यायसंगत समाज बनाने में मदद करता है।

राजस्थान में वर्तमान शिक्षा प्रणाली का अवलोकन

राजस्थान में वर्तमान शिक्षा प्रणाली सरकारी और निजी स्कूलों का मिश्रणहै। राज्य ने स्कूलों की संख्या बढ़ाने और शिक्षा तक पहुंच में सुधार करनेमें महत्वपूर्ण प्रगति की है। हालाँकि, अभी भी कई चुनौतियाँ हैं जिन्हेंसंबोधित करने की आवश्यकता है, जैसे उच्च ड्रॉप-आउट दर, शिक्षा की खराबगुणवत्ता, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी।

परिवर्तन की आवश्यकता

राजस्थान में वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सामने आने वाली चुनौतियों कोदेखते हुए परिवर्तन की तत्काल आवश्यकता है। राज्य को शिक्षा की गुणवत्तामें सुधार, सभी के लिए शिक्षा की समान पहुंच सुनिश्चित करने और समग्रशिक्षा के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने पर ध्यान देने की

आवश्यकता है।इसके लिए सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के एक सामान्य लक्ष्य कीदिशा में सरकार, नागरिक समाज और अन्य हितधारकों के साथ मिलकर काम करने केलिए एक ठोस प्रयास की आवश्यकता होगी।

शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि

A. पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र में चुनौतियों का समाधान करना

B. शिक्षकप्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास

C. शिक्षा में प्रौद्योगिकी एकीकरण

शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना एक बहुआयामी मुद्दा है जिसके लिएपाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र में चुनौतियों का समाधान करने, शिक्षकप्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास प्रदान करने और शिक्षा में प्रौद्योगिकी कोएकीकृत करने की आवश्यकता है। आइए इनमें से प्रत्येक क्षेत्र को अधिकविस्तार से देखें:

पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र में चुनौतियों को संबोधित करना

शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारकों मेंसे एक शिक्षण प्रयुक्त पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र है । पाठ्यक्रम कोछात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया जाना चाहिए और उनकेभविष्य के करियर के लिए प्रासंगिक होना चाहिए। छात्रों के लिए सीखने कोआकर्षक और सार्थक बनाने के लिए शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की निर्देशात्मकतकनीकों का भी उपयोग करना चाहिए। पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र मेंचुनौतियों को संबोधित करने में शामिल हो सकते हैं:

- यह सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यक्रम की समीक्षा करना और अद्यतन करना कि यह छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- अधिक परियोजना-आधारित शिक्षण और व्यावहारिक गतिविधियों को शामिल करना।
- यह सुनिश्चित करना कि पाठ्यक्रम वर्तमान उद्योग प्रवृत्तियों के अनुरूप है।
- नवीन शिक्षण तकनीकों को विकसित करने में मदद करने के लिए शिक्षकों को संसाधन प्रदान करना।
- सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए शिक्षकों के बीच सहयोग और सहकर्मी सीखने को प्रोत्साहित करना।

शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास

शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।उन्हें प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस होने कीआवश्यकता है। शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास प्रदान करना यहसुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि शिक्षक वर्तमान रुझानों औरसर्वोत्तम प्रथाओं के साथ अद्यतित रहें। इसमें शामिल हो सकता है:

- शिक्षकों को निरंतर प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करना।
- व्यावसायिक विकास के अवसरों में भाग लेने के लिए शिक्षकों को प्रोत्साहित करना।
- नए शिक्षकों के लिए सलाह और कोचिंग कार्यक्रम पेश करना।
- शिक्षकों को साथियों के साथ सहयोग करने और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- ऑनलाइन संसाधनों और प्रशिक्षण सामग्री तक पहुंच प्रदान करना।

शिक्षा में प्रौद्योगिकी एकीकरण

प्रौद्योगिकी शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभासकती है। इसका उपयोग सीखने को अधिक आकर्षक, इंटरैक्टिव और वैयक्तिकृत बनानेके लिए किया जा सकता है। शिक्षा में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करना शामिल होसकता है:

© 2024 EIJO, All Rights Reserved

- प्रौद्योगिकी उपकरणों और बुनियादी ढांचे तक पहुंच प्रदान करना।
- ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म और डिजिटल संसाधनों के उपयोग को प्रोत्साहित करना।
- शिक्षकों को उनके शिक्षण में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने के तरीके पर प्रशिक्षण प्रदान करना।
- छात्रों और शिक्षकों के बीच सहयोग और संचार की सुविधा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना।
- छात्रों के बीच डिजिटल साक्षरता कौशल के विकास को प्रोत्साहित करना।

कुल मिलाकर, शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण कीआवश्यकता होती है जो पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र में चुनौतियों का समाधानकरता है, शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास प्रदान करता है, और शिक्षामें प्रौद्योगिकी को एकीकृत करता है। ऐसा करके, हम यह सुनिश्चित कर सकतेहैं कि छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा मिले जो उन्हें भविष्य कीसफलता के लिए तैयार करे।

शिक्षा में नवाचार को बढ़ावा देना

1 डिजिटल शिक्षा और ई-लर्निंग

2 बहुभाषी शिक्षा

3 रचनात्मक और महत्वपूर्ण सोच राजस्थान के विशेष संदर्भ में

1. डिजिटल शिक्षा और ई-लर्निंग

डिजिटल शिक्षा और ई-लर्निंग में राजस्थान में शिक्षा में क्रांति लानेकी क्षमता है, क्योंकि वे भौगोलिक रूप से फैले हुए छात्रों तक पहुंचने मेंमदद कर सकते हैं और उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा संसाधनों तक पहुंच प्रदानकर सकते हैं। राजस्थान ने इस क्षेत्र में कुछ प्रगति की है, राजस्थान ज्ञाननिगम लिमिटेड (आरकेसीएल) और राजस्थान ज्ञान संकल्प पोर्टल जैसी पहलों केसाथ, जो छात्रों और पेशेवरों को ऑनलाइन शिक्षा और प्रशिक्षण संसाधन प्रदानकरते हैं।

हालाँकि, डिजिटल बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकी तक पहुँच के मामले मेंअभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है। राजस्थान के कई ग्रामीण क्षेत्रों मेंविश्वसनीय इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल उपकरणों तक पहुंच नहीं है, जोई-लर्निंग पहल के संभावित प्रभाव को सीमित करता है। इसके अलावा, यहसुनिश्चित करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता है कि शिक्षक अपनेशिक्षण अभ्यासों में डिजिटल उपकरणों को एकीकृत करने के लिए सुसज्जित हों।

2. बहुभाषी शिक्षा

राजस्थान एक भाषाई रूप से विविध राज्य है, जिसमें हिंदी, राजस्थानी औरअंग्रेजी सहित कई अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। कई भाषाओं में शिक्षाप्रदान करने से यह सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है कि सभी छात्रों कीभाषाई पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच हो।

राजस्थान सरकार ने बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाए हैं, जिसमें कक्षा 1-8 के छात्रों के लिए हिंदी और अंग्रेजी में द्विभाषीपाठ्यपुस्तकों की शुरुआत शामिल है। हालांकि, अधिक द्विभाषी संसाधनों केविकास और बहुभाषी शिक्षण प्रथाओं में शिक्षकों के प्रशिक्षण सहित बहुभाषीशिक्षा में और निवेश की आवश्यकता है।

© 2024 EIJO, All Rights Reserved

रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच

21वीं सदी की चुनौतियों के लिए छात्रों को तैयार करने के लिए रचनात्मकऔर महत्वपूर्ण सोच कौशल विकसित करना आवश्यक है। राजस्थान ने इन कौशलों केमहत्व को पहचाना है और छात्रों के बीच नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देनेके लिए "राजस्थान इनोवेशन मिशन" जैसी पहल शुरू की है। हालाँकि, शिक्षक प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम विकास सहित शिक्षा प्रणाली मेंरचनात्मकता और महत्वपूर्ण सोच पर व्यापक ध्यान देने की आवश्यकता है। इसकेअलावा, राजस्थान में पारंपरिक शिक्षण पद्धति रट्टा सीखने और याद करने परध्यान केंद्रित करती है, जो रचनात्मक और महत्वपूर्ण सोच के अवसरों को सीमितकर सकती है। शिक्षा में नवाचार को पूरी तरह से अपनाने के लिए, राजस्थान कोअधिक छात्र-केंद्रित और पूछताछ-आधारित शिक्षण पद्धतियों की ओर स्थानांतरितकरने की आवश्यकता होगी।

भूगोल शिक्षण के प्राप्य उद्देश्य	**अपेक्षित व्यवहारीय परिवर्तन**
1.**ज्ञान प्राप्ति का उद्देश्य**	इस उद्देश्य की प्राप्ति के फलस्वरूप (i) छात्र, भूगोल सम्बन्धी तथ्यों, सिद्धान्तों, परिभाषाओं का प्रत्यास्मरण (Recall) करता है। (ii) भौगोलिक तथ्यों, शब्दों, युक्तियों एवं यन्त्रों को पहिचान लेता है। (iii) मानचित्र, रेखाचित्र, चार्ट आदि को पढ़ता, एवं उन पर सूचनाओं को प्रदर्शित करता है।
2. **ज्ञान को समझने का उद्देश्य**	(i) वर्गीकरण एवं तुलना करता है। (ii) किसी खास तथ्य को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण देता है (iii) तथ्यों एवं सिद्धान्तों की व्याख्या करता है एवं विवेचन करता है। (iv) कार्य व कारण, साधन व साध्य में अन्तर व सम्बन्ध को जान लेता है। (v) त्रुटियों का ज्ञान एवं उनको सही करता है।
3. **ज्ञानोपयोग का उद्देश्य**	(i) भौगोलिक ज्ञान को नवीन परिस्थितियों में समझता है। (ii) किसी स्थिति का विश्लेषण करने के पश्चात् समस्या को पहचान जाता है, उसके समाधान के लिये तथ्यों व सिद्धान्तों का चयन करता है (iii) उपकल्पनायें बनाता, उनकी जाँच करता एवं सम्बन्ध स्थापित करता है। (iv) सिद्धान्तों एवं तथ्यों का सामान्यीकरण करता है। (v) किसी प्रमाण का मूल्यांकन करता है एवं नवीन परिस्थिति को समझने के लिये सिद्धान्तों का निरूपण करता है। (vi) विभिन्न समस्याओं का हल निकाल लेता है।
4. **रुचि का उद्देश्य**	(i) पुस्तकों, पत्रिकाओं एवं अखबारों को पढ़कर महत्व की सूचनाओं को एकत्रित करता है। (ii) भौगोलिक महत्त्व के स्थानों का पर्यटन करने में रुचि लेता है। (iii) भूगोल वेत्ता के जीवन परिचय एवं उनके भाषण में रुचि लेता है। (iv) भौगोलिक महत्त्व की वस्तुओं के नमूने, तस्वीर, मॉडल, फोटो आदि एकत्रित करने में रुचि लेता है। (v) भूगोल से सम्बन्धित, मॉडल, चार्ट आदि बनाने में रुचि लेता है।

© 2024 EIJO, All Rights Reserved

	(vi) भौगोलिक समस्याओं पर बहस (discussion) करता है। (vii) अपने राज्य, देश एवं संसार के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों के रहन-सहन, रीति-रिवाज एवं उद्योग-धन्धों में रुचि लेता है।
5. **अभिवृत्ति का उद्देश्य**	(i) उसमें स्वस्थ देश भक्ति की भावनाओं का विकास होता है। (ii) उस संस्था के प्रति अपनत्व की भावना प्रदर्शित करता है, जिससे उसका सम्बन्ध है। (iii) अपने समुदाय के लोगों की सहायता के लिए तैयार रहता है। (iv) पृथ्वी के विभिन्न भागों में रहनेवाले लोगों के रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, संस्कृति आदि के प्रति प्रेम वसहानुभूति प्रदर्शित करता है। (v) अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को अपनाता है। (vi) मनुष्य को भौगोलिक वातावरण को परिवर्तित करने का एक साधन मानता है।
6. **गुण-ग्राहकता का उद्देश्य**	(i) भौगोलिक तथ्यों, सिद्धान्तों एवं विचारों में विश्वास करता है और उसकी सराहना करता है। (ii) मनुष्य की सांस्कृतिक विरासत (Cultural heritage) की सराहना करता है। (iii) भिन्न-भिन्न प्रदेशों एवं राष्ट्रों की आर्थिक और सांस्कृतिक निर्भरता की सराहना करता है।

जाता है(सिबली, 2003)। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि स्कूल भूगोल समानता के साथ-साथ अंतर भीअन्य स्कूल विषयों के शिक्षण उद्देश्य साझा करता है।इसलिए, जैसा कि अन्य विषयों में मूल्यांकन मेंभूगोल कथन से प्रभावित हैपाठ्यक्रम के उद्देश्य होता है,

शोध संदर्भ

1. आलम, एस. (2010), रीसेंट ट्रेंड्स इन स्कूल ज्योग्राफी इन इंडिया, जर्नल ऑफ ज्योग्राफी, वॉल्यूम। 109, संख्या 6, 243-250।
2. बनर्जी, बी.के. (2006), भारतीय स्कूलों में भूगोल शिक्षा, इंटरनेशनेल शुल्बुचफोर्सचुंग, वॉल्यूम। 28, पृ.283-292.
3. भोग, डी., भारद्वाज, पी. और मलिक, डी. (2012), प्लॉटिंग कंटूर्स ऑफ द मॉडर्न नेशन: ए फेमिनिस्ट रीडिंग ऑफ, भूगोल पाठ्यपुस्तकें, समकालीन शिक्षा संवाद, वो. 9, क्रमांक 1, पृ. 39-61.
4. जॉर्ज, ए.एम., और मदन, ए. (2009), स्कूलों में सामाजिक विज्ञान शिक्षण: एनसीईआरटी की नई पाठ्यपुस्तक पहल, सेज पब्लिकेशंस इंडिया प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली।
5. हडसन, बी. (1994), ज्योग्राफी इन द कोलोनियल स्कूल्स: द क्लासरूम एक्सपीरियंस इन वेस्ट इंडियन लिटरेचर, भूगोल, खंड. 79, संख्या 4, पृ. 322-329
6. कोठारी आयोग (1966), शिक्षा आयोग की रिपोर्ट, 1964-66, शिक्षा मंत्रालय, सरकार भारत सरकार, नई दिल्ली,
7. कुमार, पी. (1996), भूगोल में शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया, सिंह में, एल. आर. (संपादक) न्यू फ्रंटियर्स इन इंडियनभूगोल, आर.एन. दुबे फाउंडेशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 246-253।
8. लॉन्ग, एम. और रॉबर्सन, बी.एस. (1966), शिक्षण भूगोल, हेनीमैन एजुकेशनल बुक्स लिमिटेड, लंदन।
9. मिश्रा, आर.पी. (1983), परिचय, मिश्रा में, आर.पी. (संपादक), भारतीय भूगोल में योगदान: अवधारणाएं औरदृष्टिकोण, वॉल्यूम। 1, हेरिटेज पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ 1-10।

© 2024 EIJO, All Rights Reserved